कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



महिलाएँ और मुद्रण

- महिलाओं की जिंदगी और उनकी भावनाऐं बड़ी साफगोई और गहनता से लिखी जाने लगी।
- इसलिये मध्यवर्गीय घरों में महिलाओं का पढ़ना भी पहले से बहुत ज्यादा हो गया।
- उदारवादी पिता और पति अपने यहाँ औरतों को घर पर पढ़ाने लगे।
- 19 वीं शताब्दी के मध्य में जब बड़े–छोटे शहरों में स्कूल बने तो उन्हें स्कूल भेजने लगे।
- कई पत्रिकाऐं महिला केन्द्रित होती थी और उन्होंने नारी शिक्षा की जरूरत को बार–बार रेखांकित किया।
- इन पत्रिकाओं में पाठ्यक्रम भी छपता था, और जरूरत के मुताबिक पाठ्य सामग्री भी जिसका इस्तेमाल घर बैठे स्कूली शिक्षा के लिये किया जा सकता था।

महिलाऐं एवं प्रतिबंध

- लेकिन सारे परिवारा उदार दिल नहीं थे।
- अनेक परंपरावादी हिन्दु मानते थे कि पढ़ी–लिखी कन्याऐं विधवा हो जाती हैं।
- इसी तरह दकियानुसी मुसलमानों को लगता था कि उर्दु के रूमानी अफ़साने पढ़कर औरतें बिगड़ जायेंगी।
- कभी–कभी बागी औरतों ने इन प्रतिबंधों को अस्वीकार भी किया।
- उत्तर भारत के एक दकियानूसी मुसलमान परिवार की एक लड़की ने न केवल गुपचुप ढ़ग से पढ़ना सीखा, बल्कि लिखना भी।
- उसके खानदान वाले चाहते थे कि वह सिर्फ अरबी कुरान पढ़े, जो कि उसके पल्ले नहीं पड़ता था।
- लिहाजा उसने वह जबान पढ़ने की जिद की जो उसकी अपनी थी।
- 19 वीं सदी के प्रारंभ में पूर्वी बंगाल में कट्टर रूढ़ीवादी परिवार में ब्याही कन्या रशसुन्दरी देवी ने रसोई में छिप–छिप कर पढ़ना सीखा।
- बाद में उसने "आमार जीवन" नामक आत्मकथा लिखी, जो 1876 में प्रकाशित हुई।
- यह बंगाली भाषा में प्रकाशित पहली सम्पूर्ण आत्म–कहानी थी।
- चूंकि सामाजिक सुधारों और उपन्यासों ने पहले ही नारी जीवन और भावनाओं में दिलचस्पी पैदा

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

कर दी थी, इसलिये महिलाओं द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं के प्रति कुतुहल तो था ही।

- कैलाशबाशिनी देवी जैसी महिलाओं ने 1860 के दशक से महिलाओं के अनुभवों पर लिखना शुरू किया।
- कैसे वे घरों में बंदी और अनपढ़ बनाकर रखी जाती हैं।
- कैसे वे पूरे घर के काम का बोझ उठाती हैं।
- जिनकी सेवा वे करती हैं वे ही उन्हें कैसे दुत्कारत हैं।
- महाराष्ट्र में 1880 के दशक में ताराबाई शिंदे और पंडिता रमाबाई ने उच्च जाति की नारियों की दयनीय हालत के बारे में जोश और रोष से लिखा।
- सामाजिक बंधनों में बंधी औरत के लिये पढ़ने के क्या मायने हैं इस पर एक तमिल उपन्यास में एक औरत ने लिखा– "बहुतेरे कारणों से मेरी दुनिया छोटी है..... मेरे जीवन की आधी से ज्यादा खुशियाँ किताबें पढ़ने से आई हैं।"
- जानी–मानी शिक्षाविद और लेखिका बेगम रोकैया शेखावत हुसैन ने 1926 में यंग महिला शिक्षा सम्मेलन को सेबोधित करते हुये कहा था–
- "नारी शिक्षा के विरोधी कहते हैं कि इससे महिलाऐं उदण्ड हो जायेंगी....."
- छि:! ये खुद को मुसलमान बताते हैं.....
- ये तो इस्लाम द्वारा औरतों को बराबरी की तालीम का हक देने के बुनियादी उसूल के खिलाफ जा रहे हैं।
- अगर पुरूष पढ़–लिखकर नहीं भटकते तो महिलाऐं क्यों बिगड़ जायेंगी, भता ?

महिलाऐं और हिन्दी की छपाई

- उर्दू, तमिल, बंगाली और मराठी प्रिंट–संस्कृति पहले विकसित हो गई थी, पर हिंदी छपाई की शुरूआत 1870 के दशक से ही हुई।
- जल्द ही इसका एक बड़ा हिस्सा नारी शिक्षण को समर्पित हुआ।
- 20 वीं सदी के आरंभ में महिलाओं के लिये मुद्रित, और कभी–कभी उनके द्वारा संपादित पत्रिकाऐं लोकप्रिय हुई।
- इनमें (1) औरतों की तालीम
  (2) विधवा–जीवन
  (3) विधवा विवाह और
  (4) राष्ट्रीय आंदोलन
  जैसे मसलों पर लिखा गया था।
- कुछ पत्रिकाऐं महिलाओं को गृहस्थी चलाने और फैशन के नुस्खे बताती थी।
- तो कुछ पत्रिकाओं ने कहानियों और धारावाहिक–उपन्यासों के जरिये मनोरंजन परोसा।

पंजाब में

- पंजाब में भी 20 वीं सदी के प्रारंभ से ही लोकप्रिय लोक–साहित्य को बड़े पैमाने पर छापा गया।
- राम चड्ढा ने औरतों को आज्ञाकारी बीवियाँ बनने की सीख देने के उद्देश्य से अपनी

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

बेस्ट–सेलिंग कृति स्त्री धर्म विचार लिखी।

- खालसा पुस्तिका सभा ने इसी तरह के संदेश देते हुये सस्ती पुस्तिकाऐं छापी।
- इनमें उच्छी औरत बनने के उपदेश को कई बार संवाद के रूप में पेश किया गया।

बटाला–प्रकाशन

- बंगाल में केन्द्रीय कलकत्ता का एक पूरा इलाका बटाला–लोकप्रिय किताबों को समर्पित हो गया।
- यहाँ पर धार्मिक गुटकों और ग्रंथो के सस्ते संस्करण के साथ–साथ अश्लील और सनसनीखेज भी उपलब्ध था।
- 19 वीं सदी के अंत तक इन किताबों पर काठ की तख्ती और लिथोग्राफी रंगों की मदद से प्रचुर मात्रा में तस्वीरें उकेरी जा रही थी।
- फेरी वाले बटाला के प्रकाशन को लेकर घर–घर घूमते थे, जिससे महिलाओं को फुर्सत के वक्त मनपसंद किताबें पढ़ने की सहुलियत हो गई।

घोर कलि (प्रलय काल)



19 वीं सदी के अंत का रंगीन काष्ठचित्र

- पारिवारिक जीवन के नष्ट–भ्रष्ट होने की कल्पना की गई हैं।
- पत्नी, जैसा कि मुहावरे में कहा जाता है, पति के सिर पर सवार है और वह खुद अपनी माँ को जंजीर पहनाकर जानवरों की तरह रखता है।



Download Miss Gyan

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इसमें कलाकार का यह डर उजागर होता है कि पश्चिमी हमले से पारिवारिक व्यवस्था उलट–पलट गई है।
- मर्द वीणा बजा रहा है और औरत हुक्का खींच रही है।
- 19 वीं सदी में महिलाओं की शिक्षा की पहल के बाद पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं के छिन्न–भिन्न हो जाने की आशंका तेज हो गई।



- इस तस्वीर में पारंपरिक भूमिकाओं का निरूपण है।
- साहब शराब की बोतल थामे हैं और मेमसाहब वायलिन बजा रही है।

लक्ष्मीनाथ बेज़बरूवा

- वे आधुनिक असमिया साहित्य के एक वरिष्ठ रचनाकार थे।
- बूढ़ी आइर साधु (दादी की कहानियाँ) उनकी उल्लेखनीय किताबों में से है।
- उन्होंने असम का लोकप्रिय गीन 'ओ मोर अपुनर देश' (ओ मेरी प्यारी भूमि) भी लिखा।



Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here